UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

"शिक्षण शैली में परिवर्तन की आवश्यकता"

सहा प्रा वैभव जोशी
सहायक प्राध्यापक,
आयडिलिक इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इन्दौर

सहा प्रा शुभम् गोभुज
सहायक प्राध्यापक,
आयडिलिक इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इन्दौर

सारांश :–
शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाय का प्याला मात्र नहीं है, ऐसा संभव है कि एक व्यक्ति अत्यधिक विद्वान हो, किन्तु आवश्यक नहीं है कि वह एक उत्तम अध्यापक हो, विषय–वस्तु का संपूर्ण ज्ञान और नये–नये तथ्यों को खोजने की प्रवृत्ति दोनों ही उत्तम शिक्षण के प्रमाण नहीं है, ऐस भी कुछ व्यक्ति हो सकते है, जिनमें जन्मजात पढ़ाने की क्षमताएँ उपस्थित रहती है। वे अपने छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने तथा उन्हें विभिन्न तथ्यों को समझाने की विशिष्ट योग्यताएँ रखते है, इसके विपरीत ऐसा भी संभव है कि अन्य अध्यापक अपने इस कार्य में इतने अधिक भाग्यशाली न हो, किन्तु प्रशिक्षण के माध्यम से वे भी अपने शिक्षण में आशातीत सुधार कर सकते है।

प्रस्तावना

शिक्षण प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाय का प्याला मात्र नहीं है, ऐसा संभव है कि एक व्यक्ति अत्यधिक विद्वान हो, किन्तु आवश्यक नहीं है कि वह एक उत्तम अध्यापक हो, विषय–वस्तु का संपूर्ण ज्ञान और नये–नये तथ्यों को खोजने की प्रवृत्ति दोनों ही उत्तम शिक्षण के प्रमाण नहीं है, ऐस भी कुछ व्यक्ति हो सकते है, जिनमें जन्मजात पढ़ाने की क्षमताएँ उपस्थित रहती है। वे अपने छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने तथा उन्हें विभिन्न तथ्यों को समझाने की विशिष्ट योग्यताएँ रखते है, इसके विपरीत ऐसा भी संभव है कि अन्य अध्यापक अपने इस कार्य में इतने अधिक भाग्यशाली न हो, किन्तु प्रशिक्षण के माध्यम से वे भी अपने शिक्षण में आशातीत सुधार कर सकते है। शिक्षाविदों ने शिक्षण विधियों को जन्म दिया है। शिक्षण विधियों का संबंध विषय–वस्तु की प्रकृति, जटिलता तथा उसे संप्रेषित करने की प्रणाली आदि से होता है, वैसे भी किसी एक ऐसी शिक्षण विधि को ज्ञात कर पाना असंभव है। जो कि अपने पूर्ण तथा समस्त परिस्थितियों में काम चलाऊ हो। अतः एक उपयुक्त विधि का चयन करना उसका उचित उपयोग करना ये दोनों भी शिक्षक के स्वयं के गुणों एवं योग्यताओं पर निर्भर करते है।

उद्देश्य :–

1. वर्तमान शिक्षण शैली के दोषों का अध्ययन
2. वर्तमान शिक्षण शैली के दोषों को दूर करने हेतू सुझाव

वर्तमान समय की अध्यापन शैली

शिक्षण विधियों को प्रमुख रुप से दो प्रकारों में बाँटा जा सकता है –

अ. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ

यहाँ पर छात्र एक शांत श्रोतागण की भांति स्थिर बैठे रहते है। वहाँ सहभागिता केवल प्रश्न पूछने तथा उनके उत्तर प्रस्तुत करने तक सीमित रहती है। प्रायः ऐसी परिस्थिति में शिक्षण वातावरण अत्यधिक औपचारिक एवं कठोर होता है। शिक्षक अपने छात्रों को कठोर अनुशासन में रखता है और उन पर हावी रहता है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

ब. छात्र केन्द्रित विधियाँ

ज्ब एक शिक्षक अपने शिक्षण का आयोजन बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को संतुष्ट करने के लिए करता है तो उसे छात्र केन्द्रित विधि कहते है, यहाँ पर छात्र केन्द्रीय भूमिका में रहते है और शिक्षक उनकी मदद करते है इसलिए इसे छात्र–केन्द्रित विधि कहते है।

अ. शिक्षक केन्द्रित विधियाँ – इसके अंतर्गत निम्नलिखित विधियां प्रचलित है –

1. व्याख्यान अथवा भाषण विधि –

यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए अत्यधिक उत्तम विधि मानी जाती है। यह विधि केवल शिक्षक के प्रभुत्व की परिचायक है जहां वह पूर्ण सक्रिय रहता है तथा श्रवणकर्ता/कक्षा अपेक्षाकृत निष्क्रिय बनी रहती है। कभी–कभी तो विद्यार्थी सुनते है, ऊब जाते है और आरोचकता का विभिन्न मुद्राओं में परिचय प्रदान करते है। फिर भी यह शिक्षण विधि अनिवार्य रुप से समस्त महाविद्यालयों से लेकर छोटी कक्षाओं में प्रयुक्त की जाती है। शायद इसका एक प्रमुख कारण है इसकी प्राचीनता तथा मितव्ययता।

व्याख्यान विधि के दोष

1. स्मृति पर अनावश्यक जोर
2. स्वतंत्र चिंतन का पूर्ण अभाव
3. अध्यापक का अत्यधिक प्रभुत्व
4. विषयवस्तु के अवबोध में कठिनाई
5. निष्क्रिय श्रोतागण
6. वैज्ञानिक दृष्टिकोण में बाधक
7. करके सीखने के सूत्र के विरुद्ध
8. प्रजातांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध
9. तार्किक शक्ति के विकास में बाधक

2. व्याख्यान प्रदर्शन विधि –

इस विधि में एक शिक्षक प्रयोग प्रदर्शन दोनों को ही संयुक्त एवं प्रभावी ढंग से प्रयुक्त करता है। शिक्षण व्याख्यान भी प्रस्तुत करता है, समझाता भी है प्रश्न भी पूछता है तथा उत्तर प्रस्तुत करता है। छात्र इस प्रक्रिया में पूर्ण सक्रिय बने रहते है तथा उन्हें निरीक्षण एवं तर्कशक्ति की अपेक्षित है कि सच वह जो सिर चढ़ कर बोले, यहाँ शिक्षक अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए किसी क्रिया, प्रयोग अथवा कौशल का सहारा लेता है।

व्याख्यान प्रदर्शन विधि के दोष

उपयुक्त गुणों के साथ–साथ इस विधि में निम्नलिखित दोष भी पाये जाते है –

1. स्वयं करके सीखने के सूत्र की अपेक्षा
2. प्रत्यक्ष अनुभवों को तिलांजलि
3. शिक्षक–केन्द्रित विधि
4. विकास में बाधक
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण में बाधक
6. वैयक्तिक विभिन्नताओं के विपरीत
7. समृति पर अनावश्यक जोर
8. स्वतंत्र चिंतन का पूर्ण अभाव

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

9. अध्यापक का अत्यधिक प्रभुत्व
10. विषयवस्तु के अवबोध में कठिनाई
11. निष्क्रिय श्रोतागण
12. करके सीखने के सूत्र के विरुद्ध
13. प्रजातांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध
14. तार्किक शक्ति के विकास में बाधक

ब. छात्र केन्द्रित विधियाँ इसके अंतर्गत निम्नलिखित विधियां प्रचलित है –

1. समस्या समाधान विधि

यह भी शिक्षण की एक महत्वपूर्ण विधि है, जिसमें छात्रों को समस्या समाधान का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। समस्या से तात्पर्य उस अनुत्तरित प्रश्न से है, जिसका समाधान खोजना शेष है, इन समस्याओं का हल खोजना समस्या समाधान है।

समस्या समाधान विधि के दोष

1. धीमी गति
2. प्रयोगों पर अत्यधिक बल
3. पाठ्यपुस्तकों का अभाव
4. अपव्ययी विधि
5. प्रतिभाशाली शिक्षकों एवं दूसरों के लिए उपयुक्त
6. प्रयोग पद्धति पर अतिरिक्त बल
7. शिक्षक की समस्या समाधान की प्रक्रिया में निपुणता

2. अधिन्यास विधि

यह एक ऐसी संयुक्त शिक्षण विधि हैं, जिसमें प्रयोग–प्रदर्शन विधि एवं व्यक्तिगत प्रयोगशाला विधि दोनों का सम्मिश्रण है, इनमें उपर्युक्त दोनें विधियों के मौलिक गुणों का मेल पाया जाता है इसमें शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह असाइनमेंट तैयार करते हुए छात्रों की आयु, रुचि, स्तर एवं प्रेरणा आदि को ध्यान में रखें।

असाइनमेंट प्रायः दो प्रकार के होते है –

1. ग्रह असाइनमेंट
2. स्कूल असाइनमेंट

ग्रह असाइनमेंट के अंतर्गत छात्र शिक्षके के द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखते है यहाँ शिक्षक छात्रों को विभिन्न स्त्रोतों के नाम तथा संदर्भ ग्रंथों की जानकारी उपलब्ध कराता है। छात्र उन सभी संदर्भ ग्रंथों एवं पाठ्यपुस्तकों को कन्सल्ट करके दिये गये प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ता है। उक्त प्रश्नों को भली–भाँति पूरा करके वह अपनी नोटबुक शिक्षक के पास जमा करा देता है। शिक्षक उत्तरों की जांच करता है। उनमें त्रुटियां खोजता है तथा आवश्यकता अनुभव करने पर छात्रों से अन्य पुस्तकें पढ़ने की सलाह के साथ उसे वापस कर देता है।

असाइनमेंट विधि के दोष –

1. विधि सम्मत पुस्तकों का अभाव
2. समय का अभाव

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

3. दीर्घकालिक पाठ्यक्रम के लिए अनुपयुक्त
4. कठिन अभ्यास की आवश्यकता
5. प्रयोगशाला का अभाव
6. नकल करने की प्रवृति
7. अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता

2. प्रोजेक्ट या योजना विधि प्रोजेक्ट विधि के अंतर्गत एक अध्यापक के प्रमुख कार्य निम्नलिखित है –

1. छात्रों का मार्गदर्शन
2. छात्रों के साथ मित्रवत् संबंध
3. छात्रों को प्रोत्साहन
4. प्रजातांत्रिक वातावरण का निर्माण
5. छात्रों को सचेष्ट बनाना
6. चरित्रिक विकास
7. अध्यापक को अधिगम अनुभूति

प्रोजेक्ट या योजना विधि के दोष

1. दीर्घ विधि
2. सतही ज्ञान
3. अनुभवहीन शिक्षक
4. कौशलहीन शिक्षक
5. पाठ्य पुस्तकों का अभाव
6. अपव्ययी विधि
7. अनुपयुक्त शिक्षण

3. **चर्चा विधि** – चर्चा विधि शिक्षण की एक बहुपयोगी विधि है, जब शिक्षक छात्रों के सहयोग से किसी जटिल समस्या के समाधान तक पारस्परिक आदान–प्रदान एवं तर्क के माध्यम से पहुँचता है तो इसे चर्चा विधि कहते है, इस विधि के अंतर्गत शिक्षक पूर्व में ही छात्रों को चर्चा का विषय दिन समय अवधि एवं कालांश आदि सुनिश्चित कर देता है और छात्रों से चर्चित विषय सामग्री के सभी पक्षों को तैयार करके लाने के लिए सूचित करता है। यदि वह आवश्यक समझता है तो उस विषय वस्तु की पृष्ठभूमि पुस्तकालय सहायक सामग्री एवं पुस्तकों आदि की भी जानकारी प्रदान करता है।

चर्चा विधि के दोष

चर्चा विधि की सफलता के लिए संभावित सावधानियाँ निम्नलिखित हो सकती है –

1. छात्रों के रुचि के अनुकूल विषय वस्तु
2. कक्षा का उचित वातावरण
3. मिलकर सोचने की भावना का विकास
4. चर्चा को वाद–विवाद बनने से रोकना चाहिए
5. सभी व्यक्तियों को बालने का अवसर प्राप्त होना चाहिए
6. व्यक्तिगत आक्रमण नहीं करना चाहिए
7. उचित अनुशासन का निर्माण

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

अध्यापन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता

अध्यापन शैली में परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की जाती है, इससे सैद्धांतिक मौखिक एवं नीरस पाठों को सहायक उपकरणों के प्रयोग से अधिक स्वाभाविक, मनोरंजक एवं उपयोगी बनायी जा सकती है। वास्तव में सहायक सामग्री का उद्देश्य हैं–श्रवण एवं दृष्टि संबंधी ज्ञानेनिद्रयों को अधिकाधिक सक्रिय बनाकर ज्ञान ग्रहण करने का पथ प्रशस्त करना।

अध्यापन शैली में परिवर्तन के उद्देश्य

1. पाठ के प्रति रुचि पैदा करना
2. तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक बनाना
3. अधिगम धारणा को सुधार करना
4. छात्रों को क्रियाशील बनाना
5. अध्ययन रुचियों को विकसित करना
6. प्रतिभाशाली बालकों के ज्ञान को संवर्द्धित करना
7. मानसिक मंदता वाले छात्रों को आधारभूत मूर्तज्ञान प्रदान करना
8. पाठ्य सामग्री को सरल, सुबोध बनाना
9. छात्र अवधान को फोकस करना
10. छात्रों के प्रेक्षण कौशलों का विकास करना
11. अमूर्त पदार्थों को मूर्त देना

अध्यापन शैली में परिवर्तन हेतु शिक्षण विधियां या शिक्षक सहायक सामग्री –

शिक्षण में प्रमुख रुप से निम्नलिखित दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है –

1. श्याम पट्ट
2. वास्तविक प्रदर्शन की वस्तुएं
3. मॉडल/प्रतिमान
4. स्लाइड
5. फिल्म एवं फिल्म स्ट्रिप
6. चार्ट, ग्राफ, मानचित्र, ग्लोब एवं रेखाचित्र
7. पत्र–पत्रिकाएँ
8. विज्ञान वाठिका
9. संग्रहालय एवं प्रदर्शन
10. रिकॉर्डिंग
11. शिक्षण खेल
12. जल, स्थल एवं जीवशाला
13. भ्रमण/सरस्वती यात्राएँ
14. बुलेटिन बोर्ड
15. फलानैन बोर्ड
16. नाटकीय अभिनय
17. रेडियो एवं ट्रांजिस्टर

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –46-51

18. माइक्रोस्कोप
19. टेपरिकॉर्डर
20. स्लाइड प्रोजेक्टर
21. फिल्म स्ट्रिप
22. टेलीविजन एवं विडियो
23. कठपुतली
24. कम्प्यूटर (पीपीटी)
25. फील्ड ट्रिप

उपसंहार

वैसे तो अध्यापक स्वयं एक उत्तम दृश्य सामग्री की तरह कार्य करता है, क्योंकि वह भी विषय को सरल एवं सुबोध बनाता है। वह भलीभाँति विषय वस्तु को समझाने का प्रयास करता है, फिर भी शिक्षक स्वयं में पूर्ण नहीं कहा जा सकता है, उपरोक्त सहायक सामग्री का प्रयोग उसके लिए वांछनीय ही नहीं अनिवार्य भी हो जाता है। अतः यह सहायक सामग्री–ऐसे साधन है, जिन्हें हम आँखों से देख सकते है, कानों से सुन सकते है, ताकि हम विषय का ज्ञान छात्रों के मस्तिष्क पर अंकित कर सके। और वे छात्र उसी से विषय का ज्ञान ग्रहण कर, उसे वास्तविक जीवन में प्रयोग कर सके और अपना तथा अपने माता–पिता के नाम को सार्थक सिद्ध कर सके।

संदर्भ ग्रंथ–

1. Adhayapak Shiksha ke Katipay Vishisht Mudde Aivam Sandhar Rashtriya Adhyapak Shiksha Parisad
2. Bhatitya Shiksha Vikas Aur Samasyae Kamal Kant Tripathi
3. Educational_Supervision R.P.Bhatnagar
4. Gunatmak Adhayapak Shiksha Ka Pathyachayara Praroop Rashtriya Adhyapak Shiksha Parisad
5. Raj Samaj Or Shiksha Krishan Kumar
6. Shaikshik Gyan Or Varchav Krishan Kumar
7. Shiksha ek vivechan Chand Kiran Suleja
8. Vishishta Shiksha ka Prarup (Bhaag-1) R.A. Sharma